## विश्वविद्यालय के बारे में

आई.एस.बी.एम. विश्वविद्यालय एक आधुनिक विश्वविद्यालय है, जिसे छत्तीसगढ़ सरकार द्वारा छत्तीसगढ़ निजी विश्वविद्यालय (स्थापना और संचालन) अधिनियम, 2005 एवं (संशोधन) अधिनियम 2016 के तहत वर्ष 2016 में स्थापित किया गया है। विश्वविद्यालय में उपलब्ध पाठ्यक्रम UGC, बार काउंसिल ऑफ इंडिया, फार्मेसी काउंसिल ऑफ इंडिया और AICTE द्वारा अनुमोदित हैं। यह छत्तीसगढ़ के गरियाबंद जिले के छुरा विकासखंड में स्थित है। यह विश्वविद्यालय अकादमिक नवाचार, अनुसंधान और उत्कृष्टता का केंद्र बनने हेतु अग्रसर है। विश्वविद्यालय में विज्ञान, कला एवं मानविकी, विधि, वाणिज्य एवं प्रबंधन, इंजीनियरिंग एवं प्रौद्योगिकी, फार्मेसी, सूचना प्रौद्योगिकी, पुस्तकालय विज्ञान, पत्रकारिता और जनसंचार सहित विभिन्न विषयों में स्नातक, स्नातकोत्तर और डॉक्टरेट स्तर के पाठ्यक्रम उपलब्ध है। विश्वविद्यालय का परिसर प्राकृतिक सुंदरता से घिरा हुआ है और शिक्षण, अध्ययन एवं अनुसंधान के लिए उपयुक्त वातावरण प्रदान करता है। यहाँ छात्रों और शोधार्थियों के लिए छात्रावास की सुविधा भी उपलब्ध है।

मुख्य संरक्षक

**डॉ. विनय एम. अग्रवाल**

माननीय कुलाधिपति,आई. एस. बी. एम. विश्वविद्यालय

संरक्षक

**प्रो. आनंद महलवार**

माननीय कुलपति, आई. एस. बी. एम. विश्वविद्यालय

सह-संरक्षक

**डॉ. बी. पी. भोल**

माननीय कुलसचिव , आई. एस. बी. एम. विश्वविद्यालय

समन्वयक समिति

**डॉ. एन. कुमार स्वामी**

आई.क्यू.ए.सी. निर्देशक एवं शैक्षणिक अधिष्ठाता,
आई. एस. बी. एम. विश्वविद्यालय

**डॉ. शुभाशीष बिस्वास**

छात्र कल्याण अधिष्ठाता, आई. एस. बी. एम. विश्वविद्यालय

संयोजक

**डॉ. दिवाकर तिवारी**

सहायक प्राध्यापक
कला एवं मानिविकी संकाय

सह-संयोजक

**सुश्री भामती साहू**

सहायक प्राध्यापक
कला एवं मानिविकी संकाय

आयोजन सचिव

**श्री रमेश कुमार नायक**

सहायक प्राध्यापक
कला एवं मानिविकी संकाय

ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये

NAAC
NATIONAL ASSESSMENT AND ACCREDITATION COUNCIL

रजत जयंती वर्ष छत्तीसगढ़

ISBM UNIVERSITY
KNOWLEDGE ❖ WISDOM ❖ HUMANITY

छत्तीसगढ़ रजत जयंती समारोह के अंतर्गत

एक दिवसीय

# राष्ट्रीय संगोष्ठी

## विकसित छत्तीसगढ़@2047- सतत विकास, समृद्ध विरासत : चुनौतियाँ एवं संभावनाएँ

दिनांक- *9* सितम्बर *2025*,
दिन-मंगलवार

आयोजक

कला एवं मानविकी संकाय

आई. एस. बी. एम. विश्वविद्यालय

+91 94531-26939, +91 74892-48481

ISBMUSEMINAR@GMAIL.COM

आई. एस. बी. एम. विश्वविद्यालय नवापारा (कोसमी) छुरा
जिला गरियाबंद (छत्तीसगढ़) पिन- 493996

## सेमिनार के बारे में

छत्तीसगढ़ का नाम लेते ही आँखों के सामने हरे-भरे जंगलों की छटा, प्रकृति की हरियाली, बहती नदियों की मधुर गूंज, लोक-संगीत की मीठी तान और मिट्टी की खुशबू जीवंत हो उठती है। यह धरती केवल एक भूभाग नहीं, बल्कि संस्कृति, इतिहास और प्राकृतिक वैभव का सुंदर संगम है। भारत के हृदयस्थल में स्थित यह प्रदेश 1 नवम्बर 2000 को एक स्वतंत्र राज्य के रूप में उभरा, परंतु इसकी जड़ें भारतीय इतिहास और सभ्यता में बहुत गहराई तक फैली हुई हैं। रामायण और महाभारत की कथाओं में 'दक्षिण कोशल' के रूप में उल्लिखित यह भूमि अनन्त प्राचीन गौरव की साक्षी रही है।

रायपुर इसकी राजधानी है, परन्तु इसकी आत्मा तो उन गाँवों में बसती है, जहाँ आज भी लोकगीतों में जीवन की कहानियाँ गूँजती हैं। धान के खेतों से समृद्ध यह राज्य 'धान का कटोरा' कहलाता है, जहाँ धरती स्वयं अन्नपूर्णा बनकर जन-जन का पोषण करती है। छत्तीसगढ़ की भूमि न केवल उपजाऊ है, बल्कि खनिज संपदा से भी भरपूर है। लौह-अयस्क, बॉक्साइट, कोयला और चूना-पत्थर जैसी सम्पदाओं ने इसे औद्योगिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण बना दिया है।

यहाँ के वन केवल हरियाली का उपहार नहीं, बल्कि आदिवासी समाज एवं वनांचल में रहने वाले समुदायों की आजीविका के साधन भी हैं। बस्तर, दंतेवाड़ा, नारायणपुर, जशपुर के घने जंगलों में आज भी प्राचीन आदिवासी सभ्यता सांस लेती है, जिनकी भाषा, पहनावा, त्यौहार और संगीत एक अलग ही संसार रचते हैं। पंथी, सुवा, राऊत नाचा जैसे लोकनृत्य केवल कला नहीं, आत्मा की अभिव्यक्ति हैं।

छत्तीसगढ़ का साहित्य भी यहाँ की आत्मा की तरह सरल, सजीव और सृजनशील है। छत्तीसगढ़ी भाषा में रचे गए कवि गीत, कथाएँ और लोक कथाएँ इस प्रदेश की संस्कृति का दर्पण हैं।

पिछले 25 वर्षों में छत्तीसगढ़ ने शिक्षा, स्वास्थ्य, उद्योग, कृषि और सामाजिक कल्याण सभी मोर्चों पर अपनी विशेष पहचान बनाई है। 2000 में स्वतंत्र राज्य बनने के बाद छत्तीसगढ़ ने शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि, उद्योग, संस्कृति, समाजसेवा जैसे हर क्षेत्र में अपनी अलग पहचान बनाई। गाँवों की गलियों से लेकर आधुनिक शहरों तक, यहाँ के लोगों ने विकास की नई इबारत लिखी।

शिक्षा के क्षेत्र में जहाँ राज्य के विभिन्न हिस्सों में उच्च स्तरीय विद्यालय और विश्वविद्यालय खुले, वहीं महिला सशक्तिकरण की दिशा में महतारी वंदन योजना और स्व-सहायता समूहों ने सामाजिक परिवर्तन को नई चेतना दी। कृषि और उद्योग दोनों में संतुलन साधते हुए छत्तीसगढ़ देश का 'धान का कटोरा' तो बना ही रहा, साथ ही लौह-अयस्क, बॉक्साइट, कोयला उत्पादन और विद्युत निर्माण ने इसे औद्योगिक मानचित्र में अग्रणी स्थान दिलाया।

इन वर्षों में आदिवासी समाज की संस्कृति, भाषा, पहनावा और परंपराएँ भी सहेजी गईं हैं – बस्तर से जशपुर तक लोकनृत्य, उत्सव और कला शिखर पर हैं। वन संरक्षण और सतत आजीविका के लिए राज्य मॉडल बना।

अब 2025 के रजत जयंती वर्ष में छत्तीसगढ़ के इन 25 वर्षों की उपलब्धियों के साथ ही 2050 के विकास लक्ष्य को, उसकी चुनौतियों एवं संभावनाओं पर बातचीत महत्वपूर्ण है। क्योंकि बीते पच्चीस वर्षों में इस माटी ने जो परिवर्तन देखा, वह गाथा अब नए अध्याय की ओर बढ़ रही है। विकास की उन्नतिपथ पर दौड़ता अपना प्रदेश अब ऐसे दौर में है जहाँ शहरीकरण की गति तेज है और गाँव धीरे-धीरे चुप होते जा रहे हैं। यह वह समय है जब हमें यह तय करना है कि हम केवल इमारतें नहीं, रिश्ते भी बनाएंगे। तकनीक लाएँगे पर संवेदना भी जोड़ेंगे। ऐसे में विकास की धारा को इस आत्मा से जोड़ना अनिवार्य हो जाता है, ताकि वह विकास महज़ मशीनी न रह जाए, बल्कि लोक की साँझ, धूप और संवाद से सिंचित हो। वह चाहे कुपोषण की समस्या हो या पर्यावरण की, शिक्षा का अधूरा विस्तार हो या जनजातीय समाज की हाशिए पर पड़ी पहचान—हर विषय पर अब केवल नीति नहीं, संवेदना आधारित पहल की आवश्यकता है। यह वह दौर है जब आंकड़ों की जगह अनुभव को, और औद्योगिक गति से ज़्यादा सामाजिक समरसता को प्राथमिकता देनी होगी। छत्तीसगढ़ की आत्मा गाँवों, वनों और लोक संस्कृतियों में बसती है—ऐसे में विकास की धारा को इस आत्मा से जोड़ना अनिवार्य हो जाता है ताकि राज्य के अगले 25 वर्षों की संभावनाएँ न केवल आर्थिक प्रगति तक सीमित रहें, बल्कि सांस्कृतिक पहचान, सामाजिक समरसता और पर्यावरणीय संतुलन के साथ एक समग्र और टिकाऊ विकास की दिशा में अग्रसर हो सकें। छत्तीसगढ़ के रजत जयंती वर्ष में आईएसबीएम विश्वविद्यालय का कला एवं मानविकी संकाय, विश्वविद्यालय परिसर में "छत्तीसगढ़ @ 50" अभियान के तहत **छत्तीसगढ़ @ 2047 - सतत विकास, समृद्ध विरासत : चुनौतियाँ एवं संभावनाएँ** विषय पर एक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन कर रहा है जिसका उद्देश्य 2047 तक छत्तीसगढ़ को विकसित राज्य बनाने के अभियान में संवेदनशीलता, सतत विकास और सांस्कृतिक विरासत की रक्षा के साथ समावेशी एवं न्यायपूर्ण प्रगति सुनिश्चित करने की चुनौतियों और संभावनाओं पर संवाद स्थापित करना है।

## सेमिनार के उपशीर्षक

1. गाँवों से महानगरों तक: छत्तीसगढ़ में समावेशी विकास की राह
2. जनजातीय संस्कृति और पहचान की रक्षा: विकास के साथ समरसता
3. हरित छत्तीसगढ़: पर्यावरणीय संतुलन और जलवायु परिवर्तन की चुनौती
4. लोककला, साहित्य और भाषा: सांस्कृतिक विरासत की निरंतरता
5. शिक्षा और युवाओं की भूमिका: 2047 के विकसित छत्तीसगढ़ का निर्माण
6. महिला सशक्तिकरण और सामाजिक समरसता
7. सतत कृषि और खाद्य सुरक्षा: धान के कटोरे की नई चुनौतियाँ
8. खनिज और औद्योगिक विकास: पर्यावरणीय एवं सामाजिक संतुलन के साथ
9. स्वास्थ्य और पोषण: आदिवासी और ग्रामीण समुदायों में सुधार की रणनीतियाँ
10. नीति, नागरिक भागीदारी और संवेदनशील शासन का भविष्य

## कला एवं मानविकी संकाय के बारे में

आईएसबीएम विश्वविद्यालय का कला एवं मानविकी संकाय विश्वविद्यालय की स्थापना के साथ ही अस्तित्व में आया। वर्तमान में, संकाय में पाँच विभाग हैं: हिंदी, अंग्रेजी, समाजशास्त्र, राजनीति विज्ञान और भूगोल। इन विभागों में छात्रों को स्नातक और स्नातकोत्तर दोनों स्तरों पर शिक्षा दी जाती है, और इसके साथ ही शोध कार्य भी कराए जाते हैं।

यह संकाय छात्रों में आलोचनात्मक सोच, रचनात्मक अभिव्यक्ति, व्यावहारिक ज्ञान और विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण विकसित करने पर विशेष जोर देता है। संकाय का लक्ष्य छात्रों को केवल सैद्धांतिक ज्ञान देना नहीं, बल्कि उन्हें वास्तविक जीवन की चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार करना है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के अनुरूप, संकाय ने अनुसंधान-केंद्रित दृष्टिकोण को अपनाया है। पीएचडी और मास्टर डिग्री कार्यक्रमों में उच्च गुणवत्ता वाले शोध को प्रोत्साहित किया जाता है, जिससे छात्रों को नए ज्ञान का सृजन करने और समाज की समस्याओं का समाधान खोजने में मदद मिलती है। यह पहल छात्रों को अकादमिक और पेशेवर जीवन दोनों में उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए प्रेरित करती है।

## आयोजन समिति

डॉ. अश्वनी कुमार साहू , सहायक प्राध्यापक
डॉ. ओम प्रकाश साहू , सहायक प्राध्यापक
श्री कृष्ण कुमार , सहायक प्राध्यापक
श्री मोहित राम चेलक, सहायक प्राध्यापक
श्री मुकुल ठाकुर, सहायक प्राध्यापक
श्री अशोक कुमार साहू , सहायक प्राध्यापक

**रजिस्ट्रेशन के लिए लिंक और क्यू.आर. कोड :**
https://forms.gle/Q1yLix22H3d8HpVK7

*SCAN HERE*

नोट - संगोष्ठी में पंजीयन निःशुल्क है । (नियम व शर्ते लागू | )